पीयूष बबेले की किताब गाँधी : सियासत और सांप्रदायिकता का विमोचन, नई दिल्ली, 22 मई, 2023

मशहूर लेखक एवं महात्मा गाँधी के पुपौत्र , श्री तुषार गाँधी ने कंस्टीटूशन क्लब ऑफ़ इंडिया के स्पीकर हॉल में इंस्टीट्यूट ऑफ़ ऑब्जेक्टिव स्टडीज (आई.ओ. एस.) द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में वरिष्ठ पत्रकार श्री पीयूष बबेले द्वारा लिखित किताब गाँधी: सियासत और सांप्रदायिकता का वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माधयम से विमोचन किया। यह आई. ओ. एस. द्वारा प्रकाशित नवीनतम पुस्तक है।

समारोह को संबोधित करते हुए श्री तुषार गाँधी ने कहा कि वे कुछ पारिवारिक कारणों से इस समय दक्षिण अफ्रीका में हैं। उन्हें समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेना था। लेकिन बाहर होने के कारण से वे समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। इस किताब को बहुत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक बताते हुए उन्होंने कहा कि जनता घृणा से उत्तेजित हो रही है और एक नया विकृत भारत बन रहा है। ऐसे माहौल में यह किताब हमें अपनी विरासत को यह याद दिलाती है कि हम अपनी पुरानी गलतियों को न दोहराएं। आज उसी घृणा और पुरानी गलतियों को दोहरा कर सारा इल्ज़ाम अंग्रेज़ों पर थोपा जा रहा है। हम अपनी 75 साल की पीड़ा को भुला नहीं पाए हैं। अगर हम अंग्रेज़ों द्वारा दी गयी पीड़ा को भुला नहीं पाए तो आगे नहीं बढ़ सकते। जिन सांप्रदायिक ताकतों ने बापू की हत्या की थी वही आज हम पर शासन कर रही है। उन्होंने कहा कि जातिवादी सियासत ने यह सब किया और आज भी वह हमारे सामने अवरोध खड़ा कर रही है। बापू हमेशा अपने को सनातनी हिन्दू कहते थे , लेकिन जातिवादी नहीं थे। सांप्रदायिक ताकतों ने फायदा उठाकर देश – भक्ति का चोला पहन कर गाँधी जी की हत्या की। उन्होंने कहा कि भारत में 5000 साल तक जातिवादी हावी रहे।

श्री तुषार गाँधी ने कहा कि विभाजन की राजनीति करने वाली ताकतें आज सत्ता में हैं। यही वजह है कि गाँधी जी के सपनो के भारत का खून किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में हमें अपनी ज़िम्मेदारी समझ कर देश हित में कुर्बानी देनी है। हमे यह किताब पढ़ कर अपना इतिहास जानना होगा। यह किताब सही समय पर आयी है। अगर देश को बचाना है तो हमे कुर्बानी देनी होगी ,क्योंकि गाँधी जी अब कुर्बानी देने नहीं आएंगे।

समारोह की शुरुआत आई. ओ. एस. के अरबी प्रभाग के मौलाना अदनान अहमद नदवी द्वारा पवित्र कुरआन के पाठ से हुयी।

अपनी पुस्तक का परिचय कराते हुए लेखक ,श्री पीयूष बबेले ने कहा कि इस में सियासत और सांप्रदायिकता पर फोकस किया गया है। कहा यह जाता है कि गांधीजी की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के कारण भारत के दो टुकड़े हुए। केरल में हुए मोपला विद्रोह के दौरान

हिंसा हुयी और धर्मान्तरण भी। और इल्ज़ाम यह लगाया गया कि गाँधी जी ने धर्मान्तरण को जायज़ ठहराया। उन्होंने कहा कि किताब में गाँधी जी और जिन्ना की मुलाकातों का तफ़सीली जायज़ा लिया गया है। भारत विभाजन के बारे में डॉ अम्बेडकर एवं वीर सावरकर के विचारों का भी समावेश इस किताब में किया गया है। उन्होंने कहा कि गाँधी जी की हिन्दू – मुस्लिम एकता कायम करने की कोशिशों में कामयाबी नहीं मिली। सावरकर हिन्दू राष्ट्र चाहते थे। अम्बेडकर का कहना था कि अगर मुसलमान मुस्लिम राष्ट्र चाहते हैं तो वह उन्हें मिलना चाहिए। किताब लिखने की ज़रूरत पर रोशनी डालते हुए श्री बबेले ने कहा कि आज यह पड़ताल करते हैं कि हिन्दू – मुस्लिम एकता को किस तरह देखा जाए।गौकशी और धर्मान्तरण जैसे चार – पांच ऐसे मामले हैं जिन पर आपसी झगड़ा होता है। उन्होंने कहा कि गाँधी जी द्वारा दिखाया रास्ता 100 साल पुराना है लेकीन वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था।

श्री बबेले ने कहा कि गांधीजी ने धर्म और सत्याग्रह की वयाख्या की। हम सच के लिए खड़े होते हैं। सुक्रात की इन बातों को गाँधी जी अपनाते हैं। इसलिए उन्हें हिंदुत्व से जोड़ना गलत है। गीता युद्ध की किताब नहीं है। हमें पूजापद्धति और ड्रेस को लेकर फैलाई जा रही गलत फ़हमियों में नहीं पड़ना चाहिए।

अपने स्वागत भाषण में इंस्टीट्यूट के महासचिव प्रो . जेड. एम. खान ने कहा कि आज हम बहुत नाज़ुक दौर से गुज़र रहे हैं। लेकिन हमें धैर्य रखना चाहिए। झूठे प्रचार के इस दौर में हमें वह करना चाहिए जिससे हमारी नई पीढ़ी प्रेरणा ले सके। आई. ओ. एस. द्वारा किये जा रहे कार्यो का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान प्रकाशन, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित कर रहा है। इस के अतिरिक्त संस्थान द्वारा मेघावी ,किन्तु साधनविहीन छात्रों को विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने के लिए छात्रवृत्ति दी जाती है। ज्वलंत सामाजिक व आर्थिक विषयों पर बराबर सेमिनार आयोजित किये जाते हैं। आम आदमी खासतौर से समाज के दबे – कुचले वर्गों और अल्पसंख्यकों की स्थिति पर सर्वे कराये जाते हैं। संस्थान द्वारा विभिन्न विषयों पर शोध परियोजनाएं भी स्वीकृत की जाती हैं। आई. ओ. एस. से हिंदी , अंगेज़ी तथा उर्दू में नियमित पत्रिकाएं एवं पुस्तकें भी प्रकाशित की जाती हैं। उन्होंने कहा कि हमे एकजुट होकर अपनी आवाज़ साझा करने हेतु आगे आना चाहिए। आई. ओ. एस. सभी को अपने विचार एवं प्रतिक्रियाएं भेजने के लिए आमंत्रित करता है। उन्होंने अपनी बात दोहराते हुए कहा कि भारत आज बहुत गंभीर दौर से गुज़र रहा है।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी के प्रोफेसर प्रो. अपूर्वानंद ने कहा कि श्री बबेले ने नेहरू जी पर एक किताब लिखी है। उसे भी पढ़ा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा एन. सी. ई. आर. टी. का पाठ्यक्रम तैयार किया गया था जिसे उलट दिया गया। गाँधी जी पर लिखी गयी किताब को सही समय पर आयी बताते हुए उन्होंने कहा कि इसमें आप गाँधी जी को सुनेंगे। इसमें सन्दर्भ हैं। इसमें संकट के भी सन्दर्भ हैं जिनसे गाँधी जी जूझते थे। इसी में उनका संत रूप दिखाई देता है। किन्तु वे एक राजनेता थे। वे राजनेता और राजनीति को परिभाषित करते हैं। वे बताते हैं कि राजनीतिज्ञ रणनीति पर काम करता है। लेकिन गाँधी जी नीति की बात करते हैं। सन् 1947 से पहले प्रतियोगी सांप्रदायिकता थी। गाँधी

जी हिन्दू साम्प्रदायिकता एवं मुस्लिम साम्प्रदायिकता , दोनों से लड़ रहे थे। उन्होनें कहा कि भारत में आज बहुसंख्यकवाद हावी है। इसे साम्प्रदायिकता नहीं कह सकते। आज की परिस्थिति में यह चिंता का विषय है कि मुसलमानों और ईसाईयों को निशान बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि उन्हें मुस्लिम परस्त कहा जाता है। लेकिन वे बहुसंख्यकवाद के खिलाफ हैं।

प्रो. अपूर्वानन्द ने कहा कि अक्सरीयत पसंदी किसी भी हालत में नहीं चल सकती। उन्होनें कहा कि लोगों के मन में तमाम पूर्वाग्रह हैं। काशी और मथुरा जैसे मामलों को अगर छोड़ भी दे तो भी 3000 और 30 हज़ार मस्जिदों के मामले उठाकर अपने पूर्वाग्रह को उजागर किया जाता है। उन्होंने कहा कि विवादित मामलों का हल संविधान तथा कानून के राज का सहारा लेकर किया जा सकता है। संविधान के आधार पर कानून का राज लागू हो और सभी संवैधानिक संस्थाएं उसी के तहत काम करें।उन्होंने कहा कि यह किताब गाँधी जी को महात्मा के रूप में नहीं बल्कि उन्हें बात करते हुए दर्शाती है। हमें भी यह प्राधिकार मिले कि हम गाँधी जी की तरह बात करें। यही हमारा निवेश है। इसके लिए हमे काफी मेहनत करनी पड़ेगी।

मुख्य वक्ता के रूप में अपनी बात रखते हुए आई. आई. टी. दिल्ली के पूर्व प्रोफेसर और सामाजिक कार्यकर्ता प्रो. विपिन कुमार त्रिपाठी ने कहा कि उन्हें ख़ुशी है कि श्री बबेले ने एक अच्छी किताब लिखी है। इस किताब में उन्होंने सांप्रदायिकता पर खुल कर लिखा है। उन्होंने कहा कि सांप्रदायिकता की दुकान आर. एस. एस. नहीं बल्कि बनिया चलाते हैं। उदारीकरण के बाद सारा व्यापारी वर्ग भाजपा के साथ चला गया। गाँधी जी ने हर मज़हब के लोगों को अपने साथ लिया। आज़ादी की लड़ाई हिन्दुओं और मुसलमानों ने एक साथ मिलकर लड़ी। हर तबके ने एक दूसरे की मदद की। अभिजात्य वर्ग को देश के विभाजन के लिए ज़िम्मेदार बताते हुए उन्होंने कहा कि हमें उसकी ज़लालत को अपने दिमाग से निकाल देना चाहिए।

महात्मा गाँधी अवार्ड नई दिल्ली के संस्थापक श्री अमित सचदेवा ने उर्दू शायर क़तील शिफ़ाई के एक शेर को उद्धरित करते हुए कहा कि सांप्रदायिकता के कारण गाँधी जी को अपना बलिदान देना पड़ा। जिन्होंने बापू की हत्या की थी वही आज सांप्रदायिकता के पेड़ को सींच रहे है। इन्ही लोगों ने हिन्दुओं के बीच फूट डाल दी। उन्होनें कहा कि एक तरफ वे हिन्दू हैं जो वाक़ई हिन्दू हैं और दूसरे धर्मों को आदर की दृष्टि से देखते हैं। दूसरी तरफ वे हिन्दू हैं जो हिंदुत्ववादी हैं। हिन्दू और हिंदुत्व में वही फ़र्क़ है जो गाँधी जी और सावरकर में है। गाँधी जी चाहते थे कि सभी धर्मों के लोग अपने – अपने धर्मों पर चलें और दूसरे धर्म के लोगों का सम्मान करें। आज गाँधी जी को निशाना बना कर नौजवानों को गलत संदेश दिया जा रहा है। इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि सुनी – सुनाई बातो पर ध्यान न देकर गाँधी जी को पढ़ा जाए। गाँधी जी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचार हैं। आज गाँधी: सियासत और सांप्रदायिकता जैसी किताबों की बड़ी ज़रूरत है। यह किताब भी बड़ी हिम्मत के साथ लिखी गयी है।

इतिहासकार लेखक एवं स्वतंत्र शोधकर्ता , डॉ. अशोक कुमार पाण्डेय ने कहा कि हिंदी में इतिहास पर बहुत कम लिखा गया है। हिंदी हृदय स्थल आज नफरत की प्रयोगशाला बन गया है। यही कारण है कि साम्प्रदायिकता के खिलाफ काम करने वाले भी कभी – कभी भटक जाते हैं। उन्होने कहा कि यह किताब एक मार्ग – दर्शिका की तरह है। इस लिए ज़रूरी है कि इसे

खरीदें और पढ़ें। आज लोग किताबें पढ़ने के बजाए फेसबुक और व्हाट्सऐप देख कर अपनी राय बनाते हैं। लेकिन सच्चाई जानने के लिए किताब पढ़ना ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि गाँधी जी धर्म का साथ नहीं छोड़ते हैं। जबकि सावरकर राजनितिक हिंदुत्व की पैरवी करते हैं। सावरकर लगभग नास्तिक हैं और अंग्रेज़ो की एक भुजा की तरह हैं। इसी प्रकार जिन्ना भी अंग्रेज़ों के बाज़ू की तरह हैं। दूसरी तरफ गाँधी जी ,मौलाना आज़ाद ,जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल हैं जो हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक हैं। हमे देश को एकजुट रखने के लिए सांप्रदायिकता और बहुसंख्यकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़नी होगी। इसके लिए आपको निचले तबके तक जाना होगा।

वरिष्ठ अधिवक्ता और लेखक श्री अनिल नौरिया ने अपने संबोधन में कहा कि हमें उनके बीच ज्यादा काम करना है जहां साम्प्रदायिकता फैली हुई है और वहा ईट – पत्थर मिलते रहते हैं। दक्षिण अफ्रीका भी गाँधी जी के लिए एक प्रयोगशाला थी जहां उन्होंने अफ्रीकी लोगों के अधिकारों के लिए काम किया। सन् 1921 में मोपला विद्रोह का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उसे लेकर गाँधी जी के बारे में गलतफ़हमियां फैलाई गयीं। श्री पीयूष बबेले ने अपनी किताब में उसका भी उल्लेख किया है। इसी सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि 2021 में हरिद्वार में आयोजित धर्म संसद में गाँधी जी पर मोपला के नरसंहार को सही ठहराने का इलज़ाम लगाया गया। जबकि सच्चाई यह है कि गाँधी जी ने उसको सही नहीं ठहराया था। यहाँ तक कि मुस्लिम नेताओ ने भी मोपला की घटना की निंदा की थी। उन्होंने यह भी कहा कि चौरी – चौरा कांड के बाद गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस नहीं लिया था। गाँधी जी राजनीतिक साम्राजयवाद ही नहीं बल्कि आर्थिक साम्राज्यवाद के भी खिलाफ थे। उन्होंने कहा कि एकता एवं संघर्ष की कहानी बताने वाली लोकप्रिय स्मृतियों को हटाया जा रहा है। हमे इन्हे कायम रखना है। इस संदर्भ में उन्होंने हरियाणा में बादशाह खान के नाम से स्थापित अस्पताल का ज़िक्र भी किया जिसका नाम हरियाणा सरकार ने बदल कर श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर रख दिया।

अंग्रेजी दैनिक ट्रिब्यून ,दिल्ली के पूर्व सम्पादक तथा वरिष्ठ पत्रकार श्री शास्त्री रामचन्द्रन ने कर्नाटक विधानसभा के परिणामों से खिलाफत आंदोलन की तुलना की। उन्होंने कहा कि खिलाफत आंदोलन के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं और इस संदर्भ में कर्नाटक विधानसभा के परिणाम बहुत महत्वपूर्ण हैं। सेकुलरवाद को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि वह धर्म विशेष के खिलाफ है लेकिन वह सभी धर्मों का सम्मान करना सिखाता है। खिलाफत आंदोलन का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि भारत के हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने खिलाफत आंदोलन को अपना समर्थन दिया था। इसमें गाँधी जी की बड़ी भूमिका थी।

उन्होंने लोगों को खिलाफत आंदोलन को अपना समर्थन देने के लिए प्रेरित किया। खिलाफत आंदोलन में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच गज़ब की सांप्रदायिक एकता दिखाई दी। गाँधी जी ने हिन्दुओं से अपील की कि वे खिलाफत आंदोलन में शामिल होकर टर्की के बहिष्कार का विरोध करें।गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन को धार्मिक कर्तव्य की संज्ञा दी थी। उन्होंने कहा कि आज गोडसे को सम्मान दिया जा रहा है। कर्नाटक का ज़िक्र करते हुए कहा कि 1924 में गाँधी जी ने कहा था कि कर्नाटक एक दिन रास्ता दिखाएगा। कर्नाटक में हाल में सम्पन्न हुए चुनावों ने साबित कर दिया कि उस राज्य की समृद्ध विरासत है। कर्नाटक में समानता और लोकतंत्र बहाल हुए हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आई. ओ. एस. के उपाध्यक्ष , प्रो. एम. अफ़ज़ल वानी ने कहा कि गाँधी जी सिर्फ एक इंसान नहीं,बल्कि एक विचार हैं। श्री पीयूष ने जो कुछ लिखा है वह वस्तुनिष्ठ है। आई. ओ. एस. भी वस्तुनिष्ठ शोध संस्थान है। तथ्यों के विश्लेषण पर ज़ोर देते हुए कहा कि काम से ज्यादा आशय या नियत पर ध्यान देना ज़रूरी है। गाँधी जी हम सभी के हैं क्योंकि वे हमेशा शांति और अहिंसा का संदेश देते थे। उन्होंने हमेशा सच्चाई का साथ दिया। उनकी सच्चाई के कारण ही चीनी जनता अपने नायक माओत्सेतुंग को गलत कहा था लेकिन गाँधी जी को सही बताया था। उन्होंने कहा कि भारतीयों को हमेशा प्रचलित विचार से प्रभावित नहीं होंना चाहिए। गाँधी जी ने सभी की बात की। चाहे महिलाएं हों ,या लम्बे समय तक चलने वाला विकास आदि। गाँधी जी आध्यात्मिक थे और उन्होंने लोगों को अहिंसा का रास्ता अपनाने का सन्देश दिया।

कार्यक्रम के अंत में संस्थान की सहायक महा सचिव , प्रो. हसीना हाशिया ने सभी मेहमानों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर पदमश्री प्रो. अख्तरुल वासे, पूर्व कुलपति , मगध विश्वविद्यालय , बोधगया प्रो. एम. इश्तियाक , कलासंकाय , जामिया मिल्लिया इस्लामिया , नई दिल्ली के डीन प्रो. मोहम्मद इसहाक ,मौ. अब्दुल हमीद नोमानी तथा अनेक पत्रकार एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन मीडिया – विशेषज्ञ ,श्री राजू मंसुखानी ने की।